सौ साल पहले की कविता / चौकीदार

मिरियम वेडर

(आज से लगभग सौ साल पहले अमेरिकन कवयित्री मिरियम वेडर (1894-1983) ने एक कविता लिखी थी, चौकीदार। पिछले दिनों टेलीग्राफ़ (कोलकाता) ने इसे पहले पन्ने पर प्रकाशित किया था। देशबंधु अख़बार ने इसका हिंदी अनुवाद छापा।)

तंग-संकरी गलियों से गुजरते
धीमे और सधे कदमों से
चौकीदार ने लहरायी थी अपनी लालटेन
और कहा था - सब कुछ ठीक है

बंद जाली के पीछे बैठी थी एक औरत
जिसके पास अब बचा कुछ भी न था बेचने के लिए
चौकीदार ठिठका था उसके दरवाजे पर
और चीखा था ऊंची आवाज में - सब कुछ ठीक है

घुप्प अंधेरे में ठिठुर रहा था एक बूढ़ा
जिसके पास नहीं था खाने को एक भी दाना
चौकीदार की चीख पर
वह होंठों ही होंठों में बुदबुदाया - सब कुछ ठीक है

सुनसान सड़क नापते हुए गुजर रहा था चौकीदार
मौन में डूबे एक घर के सामने से
जहां एक बच्चे की मौत हुई थी
खिड़की के कांच के पीछे झिलमिला रही थी एक पिघलती मोमबत्ती
और चौकीदार ने चीख कर कहा था - सब कुछ ठीक है

चौकीदार ने बितायी अपनी रात
इसी तरह
धीमे और सधे कदमों से चलते हुए
तंग-संकरी गलियों को सुनाते हुए

सब कुछ ठीक है!
सब कुछ ठीक है!!

यह सप्ताह / नींद टूटनी चाहिए

एक आदमी ने एक बहुत सुंदर बगीचा लगाया। लेकिन एक अड़चन शुरू हो गई। कोई रात में आकर बगीचे के वृक्ष तोड़ जाता, पौधे उखाड़ जाता। सुबह सारा बगीचा आधी उजड़ी हालत में आ जाता। शक हुआ कि पड़ोसी शरारत कर रहे हैं। ईष्या हो गई है।

उसने आदमी रखे, जासूस लगाए। लेकिन पता चला, कोई पड़ोसी कोई गड़बड़ नहीं कर रहा है।कोई आता नहीं।तब तो बड़ी मुश्किल हो गई। तो उसे शक हुआ कि शायद भूत-प्रेत, शायद कोई दुष्टात्माएं उपद्रव कर रही हैं।

उसने गंडेत्ताबीज बंधवाए।कुछ भी परिणाम न हुआ। भूत-प्रेतों का काम जारी रहा।तब वह घबड़ा गया।

एक फकीर गांव में आया था, वह उसके पास गया। उसने कहा, मैं बड़ी मुश्किल में आ गया हूं। अपनी सारी कथा सुनाई। उस फकीर ने कहा, तू एक काम

कोलंबा कालीधर

कर। ठीक आधी रात का अलार्म अपनी घड़ी में भर दे। और सात दिन तक जब अलार्म बजे तो जाग कर, पांच मिनट जाग कर अपने आस-पास देखना और सो जाना। सात दिन में कोई घटना तुझे दिखाई पड़े तो मेरे पास आ जाना।उसे कुछ भरोसा न आया कि अलार्म इसमें क्या करेगा! मेरा जागना इसमें क्या करेगा! लेकिन अब फकीर ने कहा है तो सात दिन की ही बात है, कर ही लेनी चाहिए। और सब उपाय कर ही चुके हैं, कुछ हुआ नहीं। अलार्म भर कर घड़ी में सो गया। दो दिन तो कुछ भी न हुआ। व्यर्थ नींद टूटी। नाराज भी हुआ। फकीर को गाली भी दी मन में। लेकिन तीसरे दिन उसने पाया कि जब अलार्म बजा तो वह बगीचे में खड़ा नींद में अपने झाड़ उखाड़ रहा था।

भागा हुआ फकीर के चरणों में गिर गया। उसने कहा कि तुम अगर मुझे न जगाते तो मैं न मालूम और कितने उपाय करता। वे सब उपाय व्यर्थ थे।

क्योंकि कोई दूसरा हानि नहीं पहुंचा रहा था। मैं ही अपनी नींद में अपने वृक्षों को उखाड़ रहा था।

और ऐसी ही दशा प्रत्येक की है। कोई तुम्हें दुख नहीं पहुंचा रहा है। कोई तुम्हारी बगिया नहीं उजाड़ रहा है। न तो पड़ोसी नष्ट कर रहे हैं, न कोई भूत-प्रेत तुम्हें सता रहे हैं।तुम ही अपनी नींद में अपनी जीवन की बगिया को उजाड़ते हो, दुख पाते हो, पीड़ा पाते हो। नींद टूटनी चाहिए।

यही है असली भारत! जहां मतलूब अहमद को चुनरी बेचने और न ही लोगों को उसे खरीदने में है कोई दिक्कत

इंद्रेश मैखुरी

दोपहर की धूप अपने चरम पर है। लालकुआं का बाजार इस दुपहरी में ऊंघता हुआ सा मालूम पड़ता है। लालकुआं का यह बाजार नैनीताल जिले के प्रमुख केंद्र हल्द्वानी से लगभग 20 किलोमीटर की दूरी पर है। यही वो जगह है, जहां बिड़ला की सेंचुरी पल्प एंड पेपर नाम की कागज की मिल है। देश भर में लोकप्रिय है सेंचुरी का कागज, पर इस इलाके के लिए प्रदूषण का बड़ा सबब है। खैर इस बारे में फिर कभी।

उत्तराखंड में 11 अप्रैल को लोकसभा के लिए चुनाव होने हैं। 9 अप्रैल प्रचार का अंतिम दिन है। इसलिए कड़ी धूप में नैनीताल-उधमसिंह नगर लोकसभा क्षेत्र से संयुक्त वामपंथ द्वारा समर्थित भाकपा (माले) प्रत्याशी कॉमरेड डॉक्टर कैलाश पांडेय के समर्थन में हम दुकानों में जनसंपर्क अभियान चला रहे हैं। दुकान-दुकान घूमते एक छोटे सी खोमचेनुमा दुकान पर हम पहुंचते हैं। दुकान पर रखी सामग्री और दुकानदार को देख कर मेरे साथ चल रहे साथी देवेंद्र रौतेला, इस ओर मेरा ध्यान आकर्षित करवाते हैं।

इस छोटी सी खोमचेनुमा दुकान पर बिकने को जो सामग्री रखी है, वो है-जय माता दी-लिखी हुई चुनरियां और श्रीफल। जिन सज्जन की ये दुकान है, वे छूटे कद के कुर्ता-पायजामा और दाड़ी वाले सज्जन हैं। पूछने पर बताया कि उनका नाम मतलूब अहमद सिद्दीकी है। उम्र 60 साल है और बीते 40 सालों से कारोबार कर रहे हैं। मतलूब भाई बताते हैं कि नवरात्रे के दौरान

इस चुनरी की मांग होती है।

यह बड़ा रोचक दृश्य है कि एक मुस्लिम बिना उज्र के जय माता दी-लिखी चुनरी और श्रीफल बेच रहा है। ये देश ऐसा ही है, जिसमें-जय माता दी-लिखी चुनरी कोई मतलूब अहमद बेच कर अपना घर चलाता है। इससे न बेचने वाले का मजहब खतरे में आता है, न खरीदने वालों के धर्म पर कोई आंच आती है।

लेकिन इसमें धार्मिक उन्माद की राजनीति घुस आए तो नाटा सा मतलूब अहमद अचानक सबसे बड़े शत्रु की तरह पेश कर दिया जाएगा। दरअसल धार्मिक उन्माद और फिरकापरस्ती की ऐसी राजनीति को शिकस्त देना, इस समय की सबसे बड़ी जरूरत है।

वोट देने के हमारे आग्रह पर मतलूब भाई कुमाऊंनी लहजे में कहते हैं- "हम तो पाल दाज्यू के साथी हुए"। बात करते हुए मतलूब भाई, कई बार बड़े स्नेह से "पाल दाज्यू" का जिक्र करते हैं। पाल दाज्यू यानि कॉमरेड मान सिंह पाल। कॉमरेड मान सिंह पाल बिन्दुखत्ता के भूमि संघर्ष की अगुवाई करने वाले भाकपा(माले) के प्रमुख नेताओं में से एक थे। 2015 में 9 मार्च को वे इस दुनिया से रुखसत हो गए। धर्म और उन्माद की राजनीति के उड़ान के दौर में इस सिलसिले को कायम रखना बहुत जरूरी है, जिसमें कोई मतलूब भाईजान, अंदर तक भिगो देने वाली स्नेहिलता के साथ किसी पाल दाज्यू को याद कर सकें,याद करते रहें।

घर सबका होता है...

अरे! शीलू तूने इतनी सारी हरी सब्जियां ले ली ,दो दिन तक साफ नहीं होंगी।आप चिंता मत करो हो जायेगी ,मेरा ही घर नहीं है ,घर सबका है। मतलब !!!

नीलू ने आश्चर्य से पूछा । आप घर चलो, फिर दिखाती हूं।जैसे ही घर में घुसे , शीलू का बेटा आया हाथ से सब्जियों का थैला ले लिया। मौसी आप भी चाय लोगे ?

हां ,नीलू ने बोला। शीलू का बारह वर्षीय बेटा ठंड के मौसम में झट से चाय बना ले आया । शीलू तूने भी रोहन को बोला, रिमी बना लेती । रिमी पढ़ रही है । वैसे भी आपको चाय पीनी है ,पी लिजिए कौन बनाके लाया उससे क्या फर्क पड़ता है? शीलू मुस्कुराते हुए बोली ।

मेरा चिंटू तो जरा भी काम को हाथ नहीं लगाता है ,रोहन ने बिना कहे चाय भी बना दी,नीलू ने आश्चर्य किया । हां , दीदी घर सबका है ,हम सब मिलकर काम करते हैं , सिर्फ मैं ही नहीं हम सबको एक दूसरे की फिक्र रहती है। नीलू इतने साल बाद छोटी बहन शीलू के यहां रहने आई थी। दोनो बहनें शाम को सब्जियां लेकर आई। चल अभी वक्त है रात के खाने में ,हम दोनो मिलकर सब्जियां साफ कर लेते हैं ,हरी सब्जियों में वक्त लगता है , अकेले मुश्किल होती है । नहीं , दीदी अभी नहीं ,अभी हम पार्क चलते हैं ।शाम को घूमना का घूमना हो जाता है , दोस्तों से मिलना भी हो जाता है ।शीलू झट से अपनी दीदी को साथ ले गई। ये मेरा वक्त है दीदी इस समय मैं सब्जियां साफ नहीं करती। शीलू ने हंसकर कहा ।

घूमकर आये तो देखा शीलू की चौदह वर्षीय बेटी रिमी ने आटा लगाकर रखा था । शीलू ने झट से रोटियां सेंक दी और सब्जियां बना दी। रिमी ने बराबर मदद कराई ।आठ बजे तक रात के खाने से निपट गये।

अरे ! वाह ,तेरे घर में सभी काम करते हैं ,तू तो किस्मत वाली है । आज शनिवार है , रियलिटी शो देखते-देखते घर के सभी लोग बैठ गये ।सबने मिलकर हरी सब्जियां साफ कर दीं। बातों का दौर भी चलता रहा ,सबने आपस में दिन कैसा बीता ,वो एक दूसरे को बताया । रोहन ने स्कूल की बातें बताई, रिमी ने ट्यूशन की, शीलू ने अपने पति राहुल को घर , दोस्तों की बातें बताई तो राहुल ने ऑफिस की ।

नीलू ये सब देखकर दंग रह गई क्यों कि उसके घर में ये सब नहीं होता है , वो अकेली ही खपती रहती है 7 यूं तो मेड आती है ,पर बाकी के कितने काम होते हैं , उसे याद नहीं कि कभी बच्चों ने उसे एक गिलास पानी भी पिलाया हो, टी.वी. में बच्चे घंटों बर्बाद कर देते हैं, पर उसकी जरा भी मदद नहीं करते , उसका अपना पति भी तो घंटों मोबाइल में डूबा रहता है 7 बेटी को सजने संवरने , पार्टी से फुर्सत नहीं, सब कितने अलग-अलग रहते हैं ।

अब उसे समझ आया कि घर सबका होता है । तूने ये सब कैसे किया , मुझसे तू छोटी है , फिर भी । बस दीदी राहुल और मैंने मिलकर बच्चों को वक्त दिया , उन्हें अच्छी आदतें सिखाई, छोटी उम्र से ही अपना काम खुद करना सिखाया, खेलने के बाद अपने खिलौने सही जगह रखें, पढ़ाई के बाद किताबें फिर से रखें । स्कूल से आते ही युनिफॉर्म इधर उधर ना बिखरा के ,करीने से अलमारी में जमायें,अपने जूते मौजे सही जगह रखें, स्कूल का लंच बॉक्स ,बोतल रसोई सिंक में रखें।

खाना खाकर अपने बर्तन खुद उठाकर रखें। रात को ब्रश करके सोयें , सुबह उठकर अपने बिस्तर खुद समेटें।पढ़ाई भी करें पर मम्मी की हर संभव मदद करें , आखिर दी घर सबका है , सबकी जिम्मेदारी है उसे साफ सुथरा रखें । मेरे घर में बेटा, बेटी दोनों काम करते हैं। राहुल भी हरसंभव मदद करते हैं। कामकाजी महिलाओं को ही क्यों आम गृहणी को भी अपने लिए वक्त चाहिए। गृहणी होने का ये मतलब नहीं कि वो दिन भर लगी रहें, अपने को वक्त नहीं दें। घर के हर सदस्य को अपना काम खुद करके सहयोग करना चाहिए। बच्चों में भी हम ये आदत डालेंगे तो वो भी आगे जाकर किसी पर निर्भर नहीं रहेंगे। ये हर महिला , हर घर के लिए अच्छा होगा। घर की गृहणी खुश रहेगी तो घर में वैसे ही खुशहाली रहेगी।

हां,शीलू तू ठीक कह रही है ,काश मैंने भी बचपन से तेरे जैसी अच्छी आदतें डाली होती।

सही है घर सबका होता है।

-कोलंबा कालीधर